

**अंडवाहिनी स्त्री.** (तत्.) जीव. अंडाणु को अंडाशय से गर्भाशय तक ले जाने वाली नलिका।

**अंडवृद्धि स्त्री.** (तत्.) 1. अंडकोश का बढ़ जाना 2. अंडकोश बढ़ने का रोग।

**अंडा पुं.** (तद्.) वह गोल पिंड जिसमें से पक्षी, साँप, मछली आदि के बच्चे निकलते हैं, मुहा. अंडे सेना- पक्षियों का अपने अंडों पर बैठ कर उन्हें गर्मी पहुँचाना, जिससे वे फूटें और बच्चा बाहर निकल आए, घर में बिना मतलब बैठे रहना; अंडे देना- व्यक्ति का घर में बिना मतलब बैठे रहना।

**अंडाकार वि.** (तत्.) अंडे के आकार, शक्ल का।

**अंडाकृति वि.** (तत्.) अंडे की शक्ल का।

**अंडाणु पुं.** (तत्.) जीव. मादा जनन कोशिका।

**अंडाभ वि.** (तत्.) अंडे के सामान आभा/कांतिवाला।

**अंडाशय पुं.** (तत्.) जीव. वह अंग जो अंडाणुओं का उत्पादन करता है।

**अंडी स्त्री.** (तत्.) 1. एरंड, अरंडी का वृक्ष अथवा फल या बीज 2. एक प्रकार का मोटा रेशम 3. उक्त रेशम की बनी हुई चादर आदि।

**अंडुआ पुं.** (देश.) 1. बिना बधिया किया हुआ पशु 2. बड़े अंडकोश वाला जिनके भार से वह चल न सके 3. सुस्त व्यक्ति।

**अंडे-बच्चे पुं.** (देश.) 1. अंडा 2. छोटे बच्चे।

**अंडोत्सर्ग पुं.** (तत्.) जीव. परिपक्व अंडाणुओं के अंडाशय से बाहर निकलने की प्रक्रिया।

**अंतः अव्य.** (अव्य.) 1. अंदर का, भीतरी, अंदरूनी 2. बीच का।

**अंतःकथा स्त्री.** (तत्.) 1. किसी वृहत् कथा के अंतर्गत उल्लिखित कोई लघु कथा 2. बीच-बीच में प्रसंगवश आई एक या एकाधिक कथाएँ।

**अंतःकरण पुं.** (तत्.) भीतरी इंद्रिय जिसके चार विभाग- मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार- माने जाते हैं।

**अंतःकलह पुं.** (तत्.) आपसी लड़ाई, गृह कलह, गृह-युद्ध, पारस्परिक वैमनस्य।

**अंतःकला स्त्री.** (तत्.) आयु. हृदय और लसीका वाहिकाओं का अस्तर, अंतःस्तर।

**अंतःकालीन वि.** (तत्.) दो कालों या घटनाओं के बीच का समय, अस्थायी समय।

**अंतःकुटिल वि.** (तत्.) मन का कुटिल/कपटी/छली।

**अंतःकेंद्र पुं.** (तत्.) गणि.ज्या. त्रिभुज के अंतःवृत्त का केंद्र।

**अंतःकेंद्रिक वि.** (तत्.) जिसका केंद्र भीतर की ओर हो भाषा. संज्ञा पदबंध का आंतरिक विस्तार जो सीधे क्रिया से संबंधित नहीं होता।

**अंतःकोण पुं.** (तत्.) गणि., ज्यामि. 1. भीतरी कोण, कोना 2. त्रिभुज या बहुभुज के अंदर का कोई कोण।

**अंतःक्रय पुं.** (तत्.) नीलामी में बहुत कम बोली लगने पर वस्तु के स्वामी द्वारा उसकी स्वयं खरीद।

**अंतःक्रिया स्त्री.** (तत्.) 1. अंदर ही अंदर होने वाली क्रिया 2. एक ही वर्ग के सदस्यों के मध्य चली या चल रही विचारों घटनाओं आदि की श्रृंखला, अन्योन्य क्रिया।

**अंतःक्षेत्र पुं.** (तत्.) भीतरी भाग।

**अंतःक्षेप पुं.** (तत्.) बीच में पड़ना (सकारात्मक भाव सूचक) किसी काम की निरंतरता को किसी परिवर्तन या स्पष्टीकरण हेतु बीच में रोकने की सकारात्मक क्रिया तु. हस्तक्षेप, (जो प्रायः सकारात्मक नहीं होता)।

**अंतःक्षेपण पुं.** (तत्.) भीतर की ओर फेंकना injection

**अंतःखंड पुं.** (तत्.) 1. अंदर का खंड/भाग/भीतरी खंड 2. दो सीमाओं के बीच का खंड, भाग।

**अंतःज्योति स्त्री.** (तत्.) हृदय में रहने वाला प्रकाश, मनःप्रकाश, अंतरज्योति, अंतर-ज्ञान।